



Ms sakshi sharma

20 Aug 2005

10:31 AM

Gwalior

Model: Web-MyKundli

Order No: 120725901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/08/2005
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 10:31:00 घंटे
इष्ट _____: 11:37:16 घटी
स्थान _____: Gwalior
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:12:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:09:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:24 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:13:36 घंटे
वेलान्तर _____: -00:03:24 घंटे
साम्पातिक काल _____: 08:08:09 घंटे
सूर्योदय _____: 05:52:05 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:48:57 घंटे
दिनमान _____: 12:56:52 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 03:20:52 सिंह
लग्न के अंश _____: 04:39:01 तुला

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: तुला - शुक्र
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: शतभिषा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मार्जार
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: गो-गौतमी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1927	श्रावण	29
पंजाबी	संवत : 2062	भाद्रपद	5
बंगाली	सन् : 1412	भाद्रपद	4
तमिल	संवत : 2062	आवनी	4
केरल	कोल्लम : 1181	चिंगम	4
नेपाली	संवत : 2062	भाद्रपद	5
चैत्रादि	संवत : 2062	भाद्रपद	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2062	श्रावण	कृष्ण 1

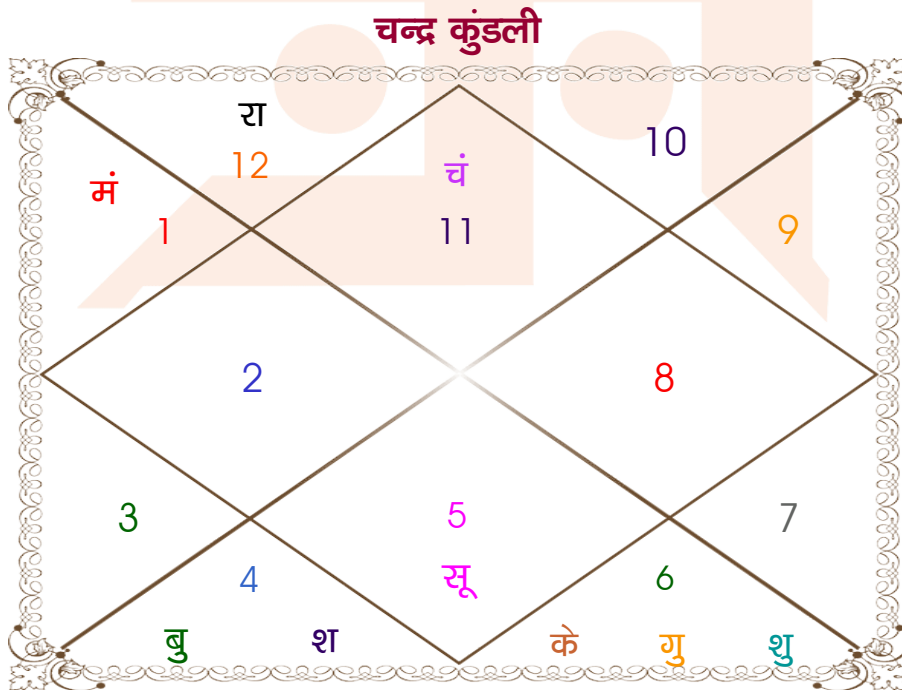
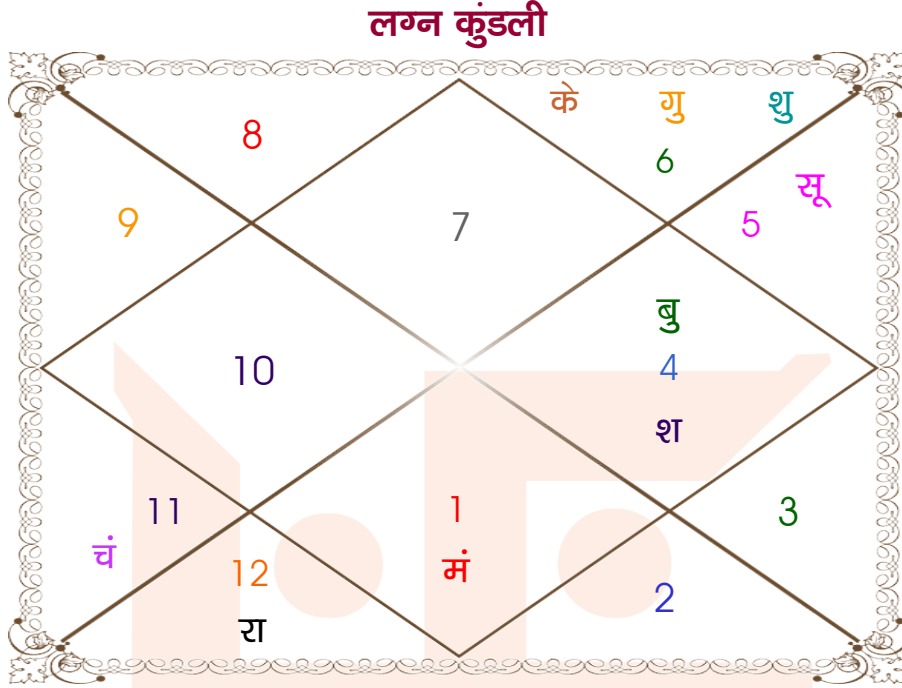
पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 1
तिथि समाप्ति काल _____: 19:39:19
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 26:29:37 घंटे
जन्म योग _____: शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग _____: अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____: 20:30:39 घंटे
जन्म योग _____: अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____: बालव
करण समाप्ति काल _____: 09:29:27 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 12:59:31
भभोग _____: 52:56:04
भोग्य दशा काल _____: राहु 13 वर्ष 6 मा 22 दि

घात चक्र

मास _____: चैत्र
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: गुरुवार
नक्षत्र _____: आर्द्रा
योग _____: गण्ड
करण _____: किंस्तुघ्न
प्रहर _____: 3
वर्ग _____: मूषक
लग्न _____: मिथुन
सूर्य _____: वृष
चन्द्र _____: मिथुन
मंगल _____: मिथुन
बुध _____: वृष
गुरु _____: कर्क
शुक्र _____: सिंह
शनि _____: मेष
राहु _____: कन्या

जन्म कुण्डली



Astrologer Pankaj Pachauri

M-7692972436

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

रा	मं		
चं			श बु
			सू
		ल	के गु शु

लग्न कुंडली

	मं	रा
		चं
श बु		
सू	ल	
के गु शु		

विंशोत्तरी
राहु 13वर्ष 6मा 22दि

राहु

20/08/2005

14/03/2121

राहु	13/03/2019
गुरु	13/03/2035
शनि	13/03/2054
बुध	13/03/2071
केतु	13/03/2078
शुक्र	13/03/2098
सूर्य	13/03/2104
चन्द्र	14/03/2114
मंगल	14/03/2121

योगिनी
धान्या 2वर्ष 3मा 3दि

सिद्धा

23/11/2022

23/11/2029

सिद्धा	03/04/2024
संकटा	24/10/2025
मंगला	03/01/2026
पिंगला	25/05/2026
धान्या	24/12/2026
भ्रामरी	04/10/2027
भद्रिका	23/09/2028
उल्का	23/11/2029

Astrologer Pankaj Pachauri

M-7692972436

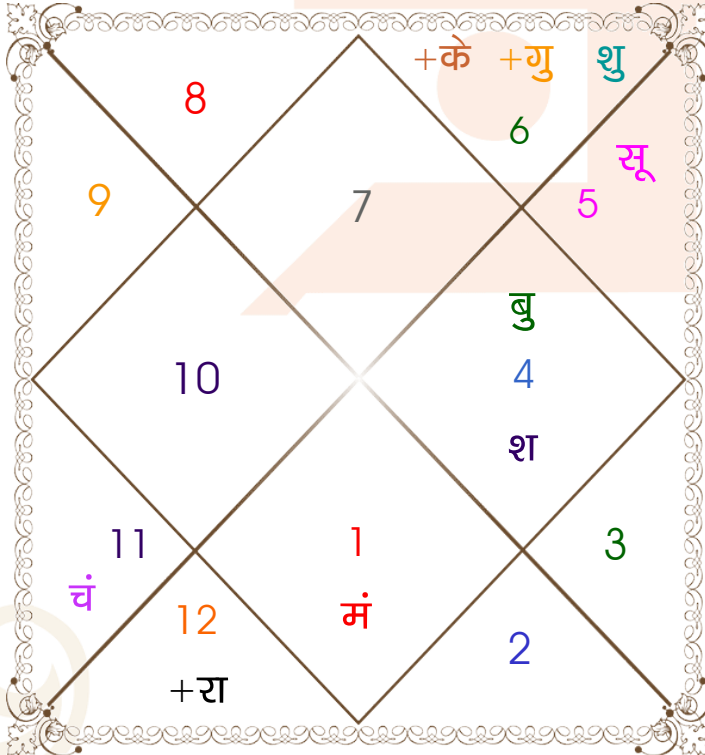
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			तुला	04:39:01	318:08:41	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	---
सूर्य			सिंह	03:20:52	00:57:44	मघा	2	10	सूर्य	केतु	सूर्य	मूलत्रिकोण
चंद्र			कुंभ	09:57:18	15:09:58	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
मंगल			मेष	18:13:29	00:27:48	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	स्वराशि
बुध			कर्क	15:49:31	00:30:04	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	शत्रु राशि
गुरु			कन्या	22:25:58	00:10:26	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	09:42:59	01:11:02	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	नीच राशि
शनि			कर्क	10:29:15	00:07:21	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	सूर्य	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	20:36:42	00:05:47	रेवती	2	27	गुरु	बुध	शुक्र	सम राशि
केतु	व		कन्या	20:36:42	00:05:47	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		कुंभ	15:19:11	00:02:19	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	शुक्र	---
नेप	व		मक	21:57:26	00:01:36	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	---
प्लूटो	व		वृश्चि	27:56:08	00:00:25	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
दशम भाव			कर्क	05:55:29	--	पुष्य	--	8	चंद्र	शनि	बुध	--

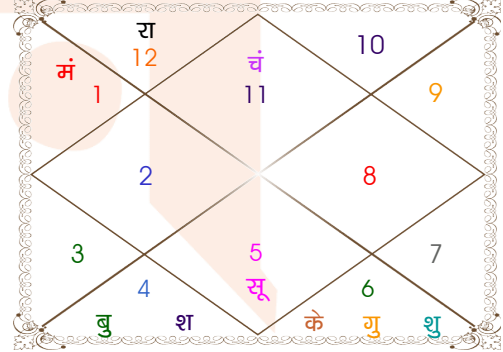
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:56:05

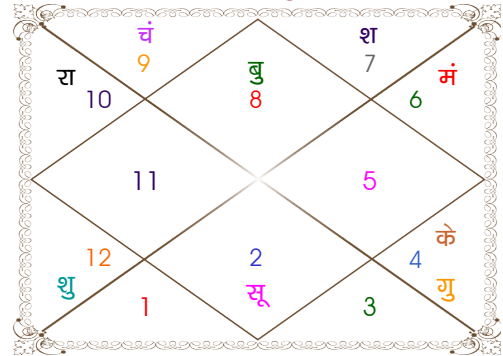
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astrologer Pankaj Pachauri

M-7692972436

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 19:51:45	तुला 04:39:01
2	तुला 19:51:45	वृश्चिक 05:04:30
3	वृश्चिक 20:17:15	धनु 05:29:59
4	धनु 20:42:44	मकर 05:55:29
5	मकर 20:42:44	कुम्भ 05:29:59
6	कुम्भ 20:17:15	मीन 05:04:30
7	मीन 19:51:45	मेष 04:39:01
8	मेष 19:51:45	वृष 05:04:30
9	वृष 20:17:15	मिथुन 05:29:59
10	मिथुन 20:42:44	कर्क 05:55:29
11	कर्क 20:42:44	सिंह 05:29:59
12	सिंह 20:17:15	कन्या 05:04:30

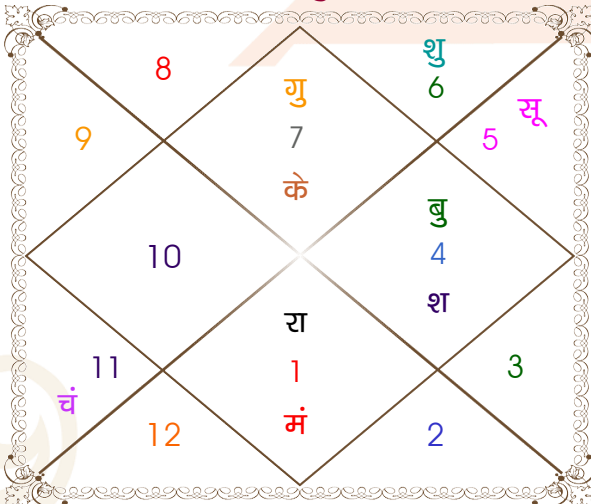
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	तुला	04:39:01
2	वृश्चिक	03:38:18
3	धनु	04:10:03
4	मकर	05:55:29
5	कुम्भ	07:53:46
6	मीन	08:00:26
7	मेष	04:39:01
8	वृष	03:38:18
9	मिथुन	04:10:03
10	कर्क	05:55:29
11	सिंह	07:53:46
12	कन्या	08:00:26

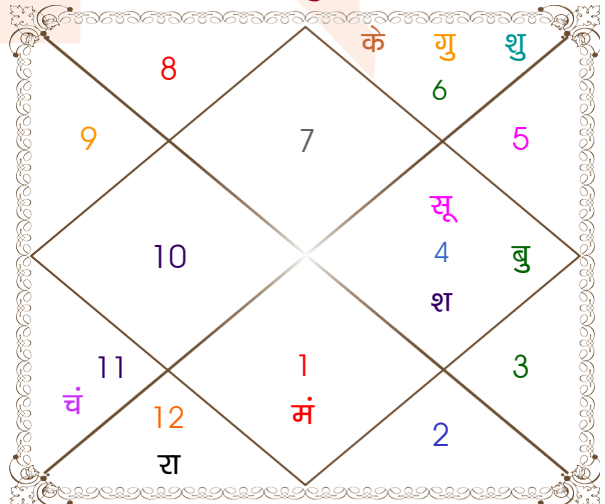
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astrologer Pankaj Pachauri

M-7692972436

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 13 वर्ष 6 मास 22 दिन

राहु 18 वर्ष 20/08/2005 13/03/2019	गुरु 16 वर्ष 13/03/2019 13/03/2035	शनि 19 वर्ष 13/03/2035 13/03/2054	बुध 17 वर्ष 13/03/2054 13/03/2071	केतु 7 वर्ष 13/03/2071 13/03/2078
20/08/2005	गुरु 30/04/2021	शनि 16/03/2038	बुध 08/08/2056	केतु 09/08/2071
गुरु 18/04/2006	शनि 12/11/2023	बुध 23/11/2040	केतु 06/08/2057	शुक्र 08/10/2072
शनि 22/02/2009	बुध 16/02/2026	केतु 02/01/2042	शुक्र 05/06/2060	सूर्य 13/02/2073
बुध 12/09/2011	केतु 23/01/2027	शुक्र 03/03/2045	सूर्य 12/04/2061	चंद्र 14/09/2073
केतु 29/09/2012	शुक्र 23/09/2029	सूर्य 13/02/2046	चंद्र 11/09/2062	मंगल 10/02/2074
शुक्र 30/09/2015	सूर्य 13/07/2030	चंद्र 15/09/2047	मंगल 09/09/2063	राहु 01/03/2075
सूर्य 24/08/2016	चंद्र 12/11/2031	मंगल 24/10/2048	राहु 28/03/2066	गुरु 05/02/2076
चंद्र 23/02/2018	मंगल 17/10/2032	राहु 30/08/2051	गुरु 03/07/2068	शनि 16/03/2077
मंगल 13/03/2019	राहु 13/03/2035	गुरु 13/03/2054	शनि 13/03/2071	बुध 13/03/2078

शुक्र 20 वर्ष 13/03/2078 13/03/2098	सूर्य 6 वर्ष 13/03/2098 13/03/2104	चंद्र 10 वर्ष 13/03/2104 14/03/2114	मंगल 7 वर्ष 14/03/2114 14/03/2121	राहु 18 वर्ष 14/03/2121 00/00/0000
शुक्र 12/07/2081	सूर्य 30/06/2098	चंद्र 12/01/2105	मंगल 10/08/2114	राहु 25/11/2123
सूर्य 13/07/2082	चंद्र 30/12/2098	मंगल 13/08/2105	राहु 28/08/2115	गुरु 21/08/2125
चंद्र 12/03/2084	मंगल 07/05/2099	राहु 12/02/2107	गुरु 03/08/2116	00/00/0000
मंगल 12/05/2085	राहु 01/04/2100	गुरु 13/06/2108	शनि 12/09/2117	00/00/0000
राहु 12/05/2088	गुरु 18/01/2101	शनि 12/01/2110	बुध 09/09/2118	00/00/0000
गुरु 11/01/2091	शनि 31/12/2101	बुध 13/06/2111	केतु 05/02/2119	00/00/0000
शनि 13/03/2094	बुध 06/11/2102	केतु 12/01/2112	शुक्र 07/04/2120	00/00/0000
बुध 11/01/2097	केतु 14/03/2103	शुक्र 12/09/2113	सूर्य 12/08/2120	00/00/0000
केतु 13/03/2098	शुक्र 13/03/2104	सूर्य 14/03/2114	चंद्र 14/03/2121	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 13 वर्ष 6 मा 30 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध 12/11/2023 16/02/2026	गुरु - केतु 16/02/2026 23/01/2027	गुरु - शुक्र 23/01/2027 23/09/2029	गुरु - सूर्य 23/09/2029 13/07/2030	गुरु - चंद्र 13/07/2030 12/11/2031
बुध 08/03/2024 केतु 25/04/2024 शुक्र 10/09/2024 सूर्य 21/10/2024 चंद्र 29/12/2024 मंगल 16/02/2025 राहु 20/06/2025 गुरु 08/10/2025 शनि 16/02/2026	केतु 08/03/2026 शुक्र 04/05/2026 सूर्य 21/05/2026 चंद्र 19/06/2026 मंगल 08/07/2026 राहु 29/08/2026 गुरु 13/10/2026 शनि 06/12/2026 बुध 23/01/2027	शुक्र 05/07/2027 सूर्य 22/08/2027 चंद्र 12/11/2027 मंगल 07/01/2028 राहु 01/06/2028 गुरु 09/10/2028 शनि 13/03/2029 बुध 29/07/2029 केतु 23/09/2029	सूर्य 08/10/2029 चंद्र 01/11/2029 मंगल 18/11/2029 राहु 01/01/2030 गुरु 09/02/2030 शनि 27/03/2030 बुध 08/05/2030 केतु 25/05/2030 शुक्र 13/07/2030	चंद्र 22/08/2030 मंगल 20/09/2030 राहु 02/12/2030 गुरु 04/02/2031 शनि 23/04/2031 बुध 01/07/2031 केतु 29/07/2031 शुक्र 18/10/2031 सूर्य 12/11/2031
गुरु - मंगल 12/11/2031 17/10/2032	गुरु - राहु 17/10/2032 13/03/2035	शनि - शनि 13/03/2035 16/03/2038	शनि - बुध 16/03/2038 23/11/2040	शनि - केतु 23/11/2040 02/01/2042
मंगल 01/12/2031 राहु 22/01/2032 गुरु 07/03/2032 शनि 30/04/2032 बुध 17/06/2032 केतु 07/07/2032 शुक्र 02/09/2032 सूर्य 19/09/2032 चंद्र 17/10/2032	राहु 26/02/2033 गुरु 23/06/2033 शनि 09/11/2033 बुध 13/03/2034 केतु 03/05/2034 शुक्र 26/09/2034 सूर्य 09/11/2034 चंद्र 21/01/2035 मंगल 13/03/2035	शनि 03/09/2035 बुध 06/02/2036 केतु 10/04/2036 शुक्र 10/10/2036 सूर्य 04/12/2036 चंद्र 05/03/2037 मंगल 08/05/2037 राहु 20/10/2037 गुरु 16/03/2038	बुध 02/08/2038 केतु 28/09/2038 शुक्र 11/03/2039 सूर्य 29/04/2039 चंद्र 20/07/2039 मंगल 16/09/2039 राहु 10/02/2040 गुरु 20/06/2040 शनि 23/11/2040	केतु 17/12/2040 शुक्र 22/02/2041 सूर्य 14/03/2041 चंद्र 17/04/2041 मंगल 11/05/2041 राहु 10/07/2041 गुरु 02/09/2041 शनि 05/11/2041 बुध 02/01/2042
शनि - शुक्र 02/01/2042 03/03/2045	शनि - सूर्य 03/03/2045 13/02/2046	शनि - चंद्र 13/02/2046 15/09/2047	शनि - मंगल 15/09/2047 24/10/2048	शनि - राहु 24/10/2048 30/08/2051
शुक्र 14/07/2042 सूर्य 09/09/2042 चंद्र 15/12/2042 मंगल 20/02/2043 राहु 13/08/2043 गुरु 14/01/2044 शनि 15/07/2044 बुध 26/12/2044 केतु 03/03/2045	सूर्य 21/03/2045 चंद्र 19/04/2045 मंगल 09/05/2045 राहु 30/06/2045 गुरु 15/08/2045 शनि 09/10/2045 बुध 27/11/2045 केतु 18/12/2045 शुक्र 13/02/2046	चंद्र 03/04/2046 मंगल 06/05/2046 राहु 01/08/2046 गुरु 17/10/2046 शनि 17/01/2047 बुध 09/04/2047 केतु 12/05/2047 शुक्र 17/08/2047 सूर्य 15/09/2047	मंगल 08/10/2047 राहु 08/12/2047 गुरु 31/01/2048 शनि 04/04/2048 बुध 31/05/2048 केतु 24/06/2048 शुक्र 31/08/2048 सूर्य 20/09/2048 चंद्र 24/10/2048	राहु 29/03/2049 गुरु 14/08/2049 शनि 26/01/2050 बुध 23/06/2050 केतु 22/08/2050 शुक्र 12/02/2051 सूर्य 05/04/2051 चंद्र 01/07/2051 मंगल 30/08/2051

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

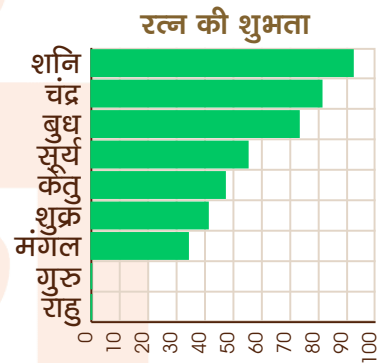
मूलांक	2
भाग्यांक	8
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	शनि, बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	शनि, बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	मकर, मिथुन, सिंह
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	हीरा
शुभ उपरत्न	जरकिन, ओपल
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	रजत
शुभ दिशा	दक्षिणपूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दूध

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
नीलम	शनि	92%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, सन्तति सुख
मोती	चंद्र	81%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
पन्ना	बुध	73%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	55%	धनार्जन
लहसुनिया	केतु	47%	व्यय, व्यावसायिक हानि
हीरा	शुक्र	41%	व्यय, दुर्घटना, रोग
मूंगा	मंगल	34%	दाम्पत्य कष्ट, धन हानि
पुखराज	गुरु	0%	व्यय, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
गोमेद	राहु	0%	शत्रु व रोग, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	13/03/2019	35%	69%	9%	73%	0%	52%	98%	25%	22%
गुरु	13/03/2035	61%	88%	46%	61%	12%	16%	92%	0%	47%
शनि	13/03/2054	35%	69%	9%	80%	0%	52%	100%	12%	22%
बुध	13/03/2071	61%	69%	34%	86%	0%	52%	92%	0%	47%
केतु	13/03/2078	35%	69%	46%	73%	0%	52%	80%	0%	61%
शुक्र	13/03/2098	35%	69%	34%	80%	0%	58%	98%	12%	55%
सूर्य	13/03/2104	67%	88%	46%	73%	0%	16%	80%	0%	22%
चंद्र	14/03/2114	61%	94%	34%	80%	0%	41%	92%	0%	22%
मंगल	14/03/2121	61%	88%	54%	61%	0%	41%	92%	0%	55%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

कम खर्च
सुख
सन्तति सुख
शत्रु व रोग
दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनावग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय-समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश द्वादश भाव में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध, शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्नयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदरोगी होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में बुध हो तो जातक नीतिकुशल, सूक्ष्माही, अत्यन्त कामुक, छोटाकदवाला, अनैतिक चरित्र, अनिश्चित स्वभाव, वाचाल, गवैया, परदेशवासी, प्रसिद्ध एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

बारहवें भाव में शुक्र होतो जातक धनवान्, परस्त्रीरत, बहुभोजी, शत्रुनाशक, मितव्ययी, आलसी, पतित, धातुविकारी, स्थूल एवं न्यायशील होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान्, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

षष्ठभावे में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीडित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूल-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(13/03/2019 - 13/03/2035)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 13/03/2019 को शुरू और 13/03/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है।

आपकी जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव, हानि और बाधा, फिजूलखर्च, व्यय, पारिवारिक अलगाव, सुदूर स्थानों की यात्रा, धोखाधड़ी और भाग्यहीनता, कैद, अस्पताल में भर्ती होना, धोखा, घोटाला, कलंक तथा गुप्त शोक, बायीं आँख, शयन सुख, ऋण तथा विदेश प्रवास का द्योतक है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है जिसकी स्थिति द्वादश भाव में तथा दृष्टि चतुर्थ, षष्ठ तथा अष्टम भाव पर है और इन भावों पर यह शुभ प्रभाव डाल रहा है। यह 16 साल की अवधि आपके लिए उतार-चढ़ाव से युक्त होगी।

स्वास्थ्य :

महादशेश गुरु की दृष्टि द्वादश भाव से षष्ठ भाव अर्थात् शत्रु भाव या रोग भाव पर होने के फलस्वरूप आपको न तो कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या होने की संभावना है और न ही कोई बड़ी दुर्घटना जो आपको शारीरिक क्षति पहुँचा सके। आपका जीवन नियमित रहेगा।

अर्थ संपत्ति :

गुरु की अष्टम भाव अर्थात् अचानक उन्नति के भाव और मांगलिक कार्य के भाव (चतुर्थ और षष्ठ भावों के अतिरिक्त) तथा चतुर्थ भाव अर्थात् सुख स्थान पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको चल संपत्ति में बढ़ोतरी करने का अवसर प्राप्त होगा तथा आप भोग-विलास की वस्तुओं पर खर्च करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु द्वादश भाव में स्थित है तथा इस भाव को शक्तिशाली बना रहा है। यह हानि और खर्च तथा अलगाव आदि का भाव है। इसके फलस्वरूप आप जो भी व्यवसाय शुरू करेंगे आपको एक या अनेक कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आपको अंतिम कदम सावधानीपूर्वक लेने की सलाह दी जाती है।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण होगा तथा आपके जीवन साथी आपके साथ पूर्ण सहयोग करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे। परिवार में कुछ उदासी हो सकती है। आप अपने सुखी परिवार का आनन्द उठाएँगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(12/11/2023 - 16/02/2026)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/03/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 12/11/2023 को प्रारंभ होकर 16/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। सब कार्य पूर्ण होंगे। लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। व्यापार, विज्ञान और संचार माध्यमों के कार्य में दक्ष होंगे। वर्षों तक लोग आपके नाम और काम को याद रखेंगे। साहित्यिक प्रतिभा के लिए प्रशंसा होगी। कार्यक्षेत्र में लाभकारी परिवर्तन हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा, माता से संबंध उत्तम रहेंगे। भूमि, जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। परिवार से प्रसन्नता प्राप्त होगी।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है; धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता की आय अच्छी होगी। माता को व्यापार में लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, सत्कार्यों पर खर्च, यात्रा और विरोधियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान की स्पर्धियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, शिक्षा में प्रगति करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, सम्मानित होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी ; उत्कृष्टता प्राप्त करेंगे। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा; व्यापार में भी अच्छी आय होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। त्वचा रोग और गठिया आदि से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः

**अंतर्दशा :- गुरु - केतु
(16/02/2026 - 23/01/2027)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/03/2019 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 16/02/2026 को प्रारंभ होकर 23/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। निवास पैतृक घर से दूरस्थ स्थान पर हो सकता है। यात्राएं हो सकती हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। समस्याओं से परेशान हो सकते हैं, मगर अंत में भाग्य साथ देगा। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। सब बाधाओं को पार करने की शक्ति बरकरार रहेगी। कार्यक्षेत्र में जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके पिता का घरेलू जीवन सुखी

रहेगा; वे अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता भाग्यशाली रहेंगी, उनकी अध्यात्म में रुचि होगी। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, लोकप्रियता, धनसंचय, उत्तम शिक्षा और सब सुखों का संकेत है।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजय होगी, सफल रहेंगे, यात्राएं होंगी, किसी महत्वपूर्ण दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। परामर्शदाताओं को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापारियों को सहकर्मियों और कर्मचारियों से कुछ समस्या हो सकती है।

स्वास्थ्य का ध्यान रखना लाभप्रद होगा। नेत्र, पैर और बायें कान की व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए गणेशजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शुक्र
(23/01/2027 - 23/09/2029)**

आपके लिए बृहस्पति महादशा 13/03/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 23/01/2027 को प्रारंभ होकर 23/09/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। मितव्ययता और बचत से धन का संचय हो सकता है। संचित धन को टूटने न दें। अध्यात्म और दान-धर्म में रुचि हो सकती है। लोगों की भलाई के कार्य करेंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कर्ज अदा कर सकते हैं। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो संकेत है।

आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य उत्तम होगा; उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता की यात्राएं होंगी; धनी बनेंगी सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, उत्तम आय और जीवनशैली, विभिन्न माध्यमों से धनलाभ का संकेत है।

आपकी संतान के कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो अनुबंधों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को सफलता मिलेगी, लघु यात्राएं हो सकती हैं या मामूली परिवर्तन हो सकते हैं। व्यापारी सफल रहेंगे।

स्वास्थ्य का, विशेषकर आंखों का ध्यान रखें, संयम का जीवन जिएं। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, श्वेत वस्त्र, दही और चीनी का दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - सूर्य
(23/09/2029 - 13/07/2030)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 13/03/2019 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 23/09/2029 को प्रारंभ होकर 13/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आप सफल होंगे। उच्चाधिकारी प्रशंसा करेंगे। उच्चपद प्राप्त करेंगे। सम्मान में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता और धनलाभ प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। हर प्रकार से लाभ होगा। निवेश और सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी का भाग्य चमकेगा। आपके पिता की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, साहित्य से लाभ होगा। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, विश्वविद्यालय में प्रवेश, भाग्य में वृद्धि और उत्तम आत्मविश्वास का संकेत है।

आपकी संतान को साझेदारी और सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रोन्नति होगी, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है, व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय सुविधासंपन्न होगा। परामर्शदाता धनार्जन करेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान और पैरों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबा दान करें।